C-4

Unit-5 (Language Across the curriculum)

सुनने एवं बोलने के कौशलों का विकास (Developing Listening and Speaking Skills) :—

* सुनने की योग्यता :—

भाषा की शिक्षा के अन्तर्गत सुनने का अर्थ है — बोधपूर्वक श्रवण करना। केवल ध्वनि-संकेतों के श्रवण ही सुनने की योग्यता के अन्तर्गत मान्य नहीं है वरन् ध्वनि-संकेतों के श्रवण के साथ-साथ उनका अर्थग्रहण भी सुनने की योग्यता का अविभाज्य अंग माना जाता है।

उच्च अथवा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सुनने की योग्यता के समुचित विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि इस स्तर के उपरान्त विश्वविद्यालयीय शिक्षण-प्रक्रिया में भाषण पद्धति प्रधानतः होती है।

मनुष्य को अपने दैनिक जीवन में सुनने बोलने पढ़ने तथा लिखने की क्रियाओं में से सर्वाधिक सुनने की क्रिया करनी पड़ती है। महत्व की दृष्टि से सुनने से बढ़कर बोलना है। आज के प्रजातान्त्रिक युग में भाषण के बल पर ही दूसरों को प्रभावित करके अपने पक्ष में किया जा सकता है।

* श्रवण एवं वाचन कौशलों का विकास करने के तरीके :—

* संवाद (Dialogue) :—

श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास करने में संवादों की विशेष भूमिका है। संवादों का प्रयोग अभिनय तथा नाटकों का रूपान्तरण करने में किया जाता है। कथानक को संवाद के सहारे बढ़ाया जाता है।

Scanned with CamScanner

संवाद से तात्पर्य है – वार्तालाप का विस्तार करने का तरीका। संवादों को बोलते समय वाचन कौशल का विकास होता है। संवाद को वार्तालाप के रूप में बढ़ाया जाता है।

अतः शिक्षक किसी विषय या प्रकरण को देकर उस पर वार्तालाप करने को कह सकते हैं। संवादों के माध्यम से प्रकरण की जानकारी होती है और कथा का सार भी स्पष्ट होता जाता है।

* कहानी कथन (Story Telling) :— वर्तमान काल में मनोविज्ञान की नवीन खोजों ने शिक्षा में महान परिवर्तन ला दिया है। अब शिक्षक नहीं विद्यार्थी शिक्षा का केन्द्र बिन्दु है। श्रवण एवं वाचन कौशलों के लिए बालक को जो भी ज्ञान दिया जाये, वह सरल एवं स्वाभाविक ढंग से दिया जाए ताकि बालक उसे पाने के लिए लालायित हो उठे।

अतः बालक की पाठ में रुचि बनाए रखने तथा उसके श्रवण एवं वाचन कौशल के विकास के लिए कहानी कथन द्वारा कौशलों का विकास आदि काल से किया जा रहा है। शिक्षक को कहानी कथन के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कहानी कथन के उद्देश्यों को पूरा करने वाला हो। कहानी का मुख्य उद्देश्य छात्रों में श्रवण तथा वाचन की योग्यता का विकास करना होता है। बोलने की योग्यता का विकास करने के लिए छात्रों से कहानी कहलवानी चाहिए तथा श्रवण शक्ति का विकास करने के लिए छात्रों को कहानी शिक्षक द्वारा सुनानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

कहानी कथन के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हो सकते हैं :—

(i) छात्रों की श्रवण-शक्ति का विकास करना।
(ii) छात्रों की बोलने की शक्ति विकसित करना।
(iii) छात्रों को स्पष्ट तथा तर्कपूर्ण ढंग से विचार करना सिखाना।
(iv) छात्रों को ~~स्पष्ट~~ अपनी कल्पना-शक्ति के प्रयोग के अवसर प्रदान करना।
(v) उनकी भाषा-शैली का परिष्कार करना।

* कहानी की उपयोगिता (Utility of Story) :—

कहानी की निम्नलिखित उपयोगिता है :—

1. कहानी वह केन्द्र बिन्दु है जो निरक्षर बच्चों के भाव-प्रकाशन से लेकर गद्य-पद्य, इतिहास, भूगोल आदि विषयों तक को बड़े रोचक ढंग से पेश किया जाता है।

2. बच्चे अपने बचपन में ही अपने घर पे माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी आदी कुटुम्बियों से, कहानी सुनने के अभ्यस्त और इच्छुक हो जाते हैं। इसलिए पाठ्य विषय को रोचक बनाने के लिए इस साधन का उपयोग करना स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक है।

3. कहानी द्वारा बच्चों की रुचि जाग्रत होती है जिज्ञासा बढ़ती है और समझ विकसित होती है।

4. बच्चों को कहानी की पुस्तकें प्रिय लगती हैं और उन्हीं को पढ़ने में अधिक रुचि दिखाते हैं। अतः छोटी कक्षा में किसी विषय को कहानी के माध्यम से पढ़ाना उपयुक्त है।

Scanned with CamScanner

5. कहानियाँ बच्चों के मनोरंजन का मुख्य साधन होती हैं। कहानियों द्वारा आदर्शों की स्थापना की जा सकती है। उन्हीं के द्वारा शिक्षक अपने शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति करता हुआ बच्चों का मन जीत सकता है और इस प्रकार अनुशासन की समस्या का हल हो सकता है।

* कहानी सुनाने वाले की विशेषताएँ :—

कहानी सुनाने वाले को स्वयं उस कहानी में रुचि लेनी चाहिए, तभी वह बालकों की श्रवण शक्ति का विकास कर सकता है। कहानी कथन इस प्रकार का होना चाहिए जिससे वह छात्रों के मर्म को स्पर्श कर सके, तभी वह उचित स्थायी संस्कार उनके हृदयों पर डाला जा सकता है।

कहानी सुनाते समय शिक्षक की दृष्टि के सामने दृश्यों का स्मृति-चित्र रहना चाहिए। जिन्हें वह स्वाभाविक गति से सुना सके। उनकी गति न बहुत तीव्र हो, न बहुत मन्द। शिक्षक को एक कुशल अभिनेता होना चाहिए। स्वर, अंग-संचालन, भाव-भंगिमा आदि भावों के अनुसार स्वाभाविक गति से होनी चाहिए अन्यथा वह विदूषकत्व की श्रेणी में पहुँच जाएगा। कहानी सुनाते समय आलंकारिक भाषा का प्रयोग छात्रों की रुचि में बड़ा व्यवधान करता है। अतः कहानीकार की भाषा धाराप्रवाहिक, मुहावरेदार और बोधगम्य होनी चाहिए। साथ ही शिक्षक स्वयं विनोदप्रिय हो जिससे विनोदात्मक तथा व्यंग्यात्मक भाषा से कहानी में सरलता आ जाए, परन्तु वह व्यंग्य किसी को दुःखी अथवा अपमानित करने वाला न हो।

Scanned with CamScanner

कहानी कहने में शिक्षक को इतना आत्मविभोर भी नहीं हो जाना चाहिए कि छात्रों का ध्यान ही न रहे। अपितु कहानी से सम्बन्धित छोटे-छोटे प्रश्न भी पूछते रहना चाहिए। कहानी सुनाने के बाद बालकों से निष्कर्ष निकलवाना श्रेयस्कर है। शिक्षक को कहानी की कथावस्तु का भी पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, तभी बच्चों के श्रवण एवं वाचन कौशलों का उचित प्रकार से विकास होना सम्भव है।

* कविता पाठ (Poem Recitation) :—

श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास कविता के माध्यम से किया जा सकता है। साहित्य के आचार्यों ने रसात्मक वाक्य को ही कविता कहा है। कविता पढ़ाने का लक्ष्य भाषा सिखाना नहीं है, कविता के अध्ययन का लक्ष्य आनन्द की प्राप्ति है। कविता पाठ में शिक्षक एवं छात्र मिलकर इसी आनन्द की खोज करते हैं और उसकी उपलब्धि ही पाठ का ध्येय होता है।

* कविता चयन (Poem Selection) :—

श्रवण एवं वाचन कौशल के विकास के लिए कविता का चुनाव करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :—

1. संकलित कविताओं के रस और सौंदर्य का आस्वादन छात्र सहज रूप से कर सकें। इसमें शिक्षक की थोड़ी-सी सहायता की आवश्यकता हो।
2. हिन्दी के प्रमुख प्राचीन और नवीन कवियों और काव्य-धाराओं का परिचय दे सकें।

Scanned with CamScanner

3. संकलित कवियों की यथासम्भव प्रतिनिधि रचनाएँ हों।
4. खड़ी बोली के अतिरिक्त हिन्दी की अन्य साहित्यिक बोलियों का भी प्रतिनिधित्व करें।
5. विभिन्न रसों, अलंकारों, छन्दों और काव्य शैलियों का परिचय दे सके।
6. छात्रों के चरित्र के निर्माण में सहायक हो।
7. छात्रों में सृजनशीलता का विकास करे।
8. छात्रों की जीवन दृष्टि को विशाल और उनकी अनुभूति को विस्तृत और गहरा बना सके।

* कविता शिक्षण के उद्देश्य :—

कविता कल्पना और मनोवेगों द्वारा जीवन की व्याख्या करती है। उसकी वृत्ति रागात्मक होती है। वह मानव, प्रकृति या जड़ तीनों से भाव ग्रहण कर मार्मिक हृदयगामी रूप से सत्य और आनन्द की व्याख्या का प्रयत्न करती है।

अतः कविता का लक्ष्य काल्पनिक और भाव जगत् में विचरण करने का साधन प्रस्तुत करना है। कविता के द्वारा वाचन की प्रवृत्ति का सरलता से विकास किया जा सकता है। कविता पढ़ाते समय अत्यधिक व्याख्या, शब्दार्थ, व्याकरण आदि का स्पष्टीकरण स्पष्टीकरण करने की विशेष चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

कविता शिक्षण के समय शिक्षक को ऐसा वातावरण उपस्थित करना चाहिए जिससे छात्रों के श्रवण तथा वाचन कौशल का उचित विकास हो सके।

Scanned with CamScanner